SYNOPSIS

समकालीन हिन्दी आत्मकथाओं में चित्रित सामाजिक यथार्थ
(चयनित लेखिकाओं के विशेष संदर्भ में)

Social Reality Depicted in Contemporary Hindi Autobiographies
(With Special Reference to Selected Women Writers)

Submitted by

Aswini Aji
21PHHIF001

Supervisor

Dr.G.Shanthi
Associate Professor, Department of Hindi

Submitted to

Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women
Coimbatore — 641 043

March 2024

समकालीन हिन्दी आत्मकथाओं में चित्रित सामाजिक यथार्थ
(चयनित लेखिकाओं के विशेष संदर्भ में)

भारतीय साहित्य में स्त्री लेखन की परंपरा काफी पुरानी है । समाज के विभिन्न क्षेत्रों में स्त्रियाँ काफी आगे बढ़ चुकी है । समकालीन हिन्दी आत्मकथा साहित्य प्रगति के सैष्ठव पर पहुँच चुका है । महिला सशक्तिकरण के असली अर्थ यह होता है कि पुरुष के समान सामाजिक स्वतंत्रता, सम्मान और आदर दिलाना है । सामाजिक शोषणों से स्त्री मुक्ति चाहती है । भारतीय संस्कृति स्त्री को देवी मानने पर धीरे-धीरे वह पूजने की वस्तु बन गयी। सामाजिक विकास के अनुसार स्त्री स्वयं निर्णय लेने की शक्ति को प्राप्त किया और पुरुष की छाया के बिना जीने, स्वतंत्र आकाश में उड़ने की क्षमता को प्राप्त की। पुरुष-वर्चस्ववादी मानसिकता को स्त्री जीवन के शोषण का मुख्य कारण माना जाता है । आजकल महिलाएँ आर्थिक स्वतंत्रता के लिए शिक्षा प्रप्त करने की कोशिश करती है । इन दोनों महत्वपूर्ण पहलुओं के बारे में स्त्रियाँ ज्ञानी हैं ।

चयनित लेखिकाओं की आत्मकथाएँ, जैसे 'जो कहा नहीं गया', 'हादसे', 'अन्या से अनन्या', 'पिंजरे की मैना', 'शिंकजे का दर्द', 'आरोह-अवरोह', 'आपहुदरी' और 'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन' के द्वारा स्त्री जीवन के विविध पहलुओं की ओर ध्यान आकर्षित हुई है । अपनी आत्मकथा के माध्यम से दूसरों से हुए अन्याय, बलात्कार, अत्याचार, उपलब्धियाँ, शिक्षा के महत्व, आत्मविश्वास, प्रेरणा और समकालीन स्त्रियों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करने की कोशिश भी किया है । प्रस्तुत आत्मकथाएँ लैंगिक समता और जातिभेद के विरोध का समर्थन करता है । पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की पहचान पिता, पति और पुत्र के द्वारा मानती है । लेकिन इन आत्मकथाओं के मुख्य पात्र या लेखिका केवल भोग्या बनना नहीं चाहती थी। इन लेखिकाओं के अनुसार शिक्षा से आर्थिक स्वतंत्रता का उपलब्ध और अपनी पहचान को भी बना सकता है । सभी शोषणों को प्रतिरोध करने की तरीका इन स्त्रियों ने प्राप्त की हैं । आदर्श भारतीय नारी बनने की चुनौती प्रत्येक महिला पर निर्भर है । ज़्यादातर महिलाएँ सामाजिक असंतुलन के प्रति विद्रोह करने में उद्यत हुई हैं । फिर भी समकालीन भारतीय समाज में महिलाएँ कई समस्याएँ अनुभव करते हैं । स्त्री जागृति का नया मोड़ और आत्मविश्वास को अंगार बनाये हुए महिला लेखिकाओं के एक नया दृष्टिकोण चयनित आत्मकथाओं में देखकर मेरे मन में इस क्षेत्र में शोध करने की आकांक्षा उत्पन्न हुई।

शोध के उद्देश्य

- चयनित आत्मकथाओं से लेखिकाओं की साहित्यिक योगदान को उजागर करना।
- आत्मकथाओं में प्रतिपादित सामाजिक, धार्मिक, पारिवारिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक यथार्थ का विश्लेषण करना।
- महिला संघर्ष एवं चुनौतियों पर प्रकाश डालना।
- आत्मकथाओं में समर्थित महिलाओं के उत्थान हेतु बहुमूल्य सुझावों को व्यक्त करना।

साहित्य समीक्षा

- हिन्दी का आत्मकथा साहित्य (स्वरूप - विवेचन तथा विकास-क्रम) - विश्वबन्धु - पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ - 1980
- हिन्दी आत्मकथा : स्वरूप एवं साहित्य - श्रीमती कमलेश सिंह - गुजरात यूनिवर्सिटी - 1982
- आत्मकथाओं में जीवन-दर्शन और युगीन चेतना - पुष्पा मिश्रा - कलकत्ता विश्वविद्यालय, 2015
- हिन्दी साहित्य में दलित आत्मकथाओं का अनुशीलन - प्रतिभा सोनगरा - मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर - 2016
- महिला आत्मकथा लेखन में स्त्री-मुक्ति की चेतना - सन्तोष कुमार - गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.) 2017
- निःशब्दता से प्रतिरोध की यात्राः हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ: विविध आयाम - डॉ. राजेश्वरी - जैन डीम्ड विश्वविद्यालय, बेंगलूरु - 2018
- इक्कीसवीं सदी का महिला आत्मकथा लेखन : संघर्ष और सृजन - श्रीमती हेमलता मीना - कोटा विश्वविद्यालय, कोटा 2018
- स्त्री हिन्दी आत्मकथा-साहित्य : एक अनुशीलन (इक्कीसवीं सदी के विशेष सन्दर्भ में) - प्रीति दुबे - कोटा विश्वविद्यालय, कोटा 2019
- इक्कीसवीं सदी की प्रमुख लेखिकाओं की आत्मकथाओं का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन (सन् 2001-2017 ई.) - सकीना अख्तर - कश्मीर विश्वविद्यालय, 2019
- हिंदी साहित्यकारों का आत्मकथा साहित्य (21वीं शती के प्रथम दशक के विशेष संदर्भ में) - श्री.प्रकाश मधुकर आठवले - शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) - 2020
- समकालीन महिला आत्मकथा लेखन परम्परा और स्त्री विमर्श - अलका वाजपेयी - जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर(म.प्र.), 2022

जहाँ तक मैंने देखा है, महिला सशक्तिकरण और लेखिकाओं की आत्मकथाओं पर हिन्दी साहित्य में अनेक शोध कार्य तो हुआ है, लेकिन मेरे शोध कार्य में समाज के विभिन्न परिस्थितियों के यथार्थ को विशेष महत्व दिया है । इन दृष्टिकोण को महत्व देकर महिला सशक्तिकरण के रूप में अभी तक कोई शोध परक अध्ययन नहीं हुआ है । इसलिए जहाँ तक संभव है, मैंने इस विषय पर शोध अध्ययन करने का प्रयास किया है।

प्रेरणा एवं सामग्री स्त्रोत

प्रेरणा :

हिन्दी की कई साहित्यिक रचनाओं को मैंने पढा है । उसमें समकालीन लेखिकाओं की आत्मकथाओं ने मुझे बहुत प्रभावित किया है । पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों ने स्त्री के गुणों को और समस्याओं को व्यक्त करने में अधिक सफलता हासिल की है । अतः उससे संबंधित समस्याओं

के चित्रण में जो अनुभव दीप्ति, सजीवता इनकी रचनाओं में चित्रित है, वह पुरुष के लेखन में दुर्मिल है ।

सामग्री स्त्रोत :

- प्राथमिक स्त्रोत: चयनित आठ आत्मकथाएँ, निजी अनुभव
- सहायक स्त्रोत: महिला सशक्तिकरण संबंधी पुस्तकें, अन्य साहित्यिक पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ, वेबसाइट एवं सामाजिक माध्यमों के विभिन्न एप ।

प्रथम अध्याय :- आत्मकथा - अवधारणा, स्वरूप एवं विकास

आत्मकथाएँ हमें व्यक्तिगत जीवन के एक अनूढ़े पहलू को समझने में मदद करती हैं और हमारे समाज के साथी और उनके योगदान को भी महत्वपूर्ण बनाती है । इस अध्याय में आत्मकथा का अर्थ एवं परिभाषा, आत्मकथा की विशेषताएँ एवं प्रयोजन, हिन्दी आत्मकथा साहित्य का विकास और आत्मकथा और हिन्दी के अन्य कथेतर गद्‍य विधाओं पर प्रकाश डाला हैं ।

द्‍वितीय अध्याय :- चयनित आत्मकथाओं का संक्षिप्त परिचय

आत्मकथाएँ मुख्य रूप से लेखकों के व्यक्तिगत अनुभवों को प्रकट करती हैं। आधुनिक महिला आत्मकथाकार अपनी साहित्य से कई उद्देश्यों से निजी जीवन की घटनाओं का समर्थन किया है, यह मनोरंजन और कल्पना के साथ-साथ बदलते समाज में महिलाओं की स्थिति के यथार्थवादी चित्रण पर प्रकाश डालता है। इस अध्याय में निम्नलिखित आत्मकथाओं के परिचय दिये हैं - जो कहा नहीं गया (1996) - कुसुम अंसल, हादसे (2005) - रमणिका गुप्ता, अन्या से अनन्या (2007) - प्रभा खेतान, पिंजरे की मैना (2008) - चन्द्रकिरण सौनरेक्सा, शिंकजे का दर्द (2011) - सुशीला टाकभौरे, आरोह-अवरोह (2015) - सुषम बेदी , आपहुदरी (2015) - रमणिका गुप्ता और पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन(2018) - मानोबी बंद्‍योपाध्याय।

तृतीय अध्याय :- चयनित आत्मकथाओं में नारी जीवन यथार्थ

नारी जीवन की परिस्थितियों के वास्तविक चरणों को महिलाओं की आत्मकथा के माध्यम से दर्शाया गया है । साहित्यिक रचनाओं में यथार्थ रूप में लिखे गये पदबंध को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है । इस अध्याय में पारिवारिक यथार्थ, माता-पिता की भूमिका, बेटा-बेटी भेदभाव, पति-पत्नी, यौन जीवन की वास्तविकता और महत्व, अकेलापन, स्वार्थी पुरुष, सशक्त महिला, सांस्कृतिक यथार्थ, विवाह, अंतर्जातीय प्रेम विवाह, अविवाहित नारी जीवन, विधवाओं पर सांस्कृतिक प्रतिबंध, सरनेम का यथार्थ, धार्मिक यथार्थ, धार्मिक विश्वास/ अंधविश्वास, सामाजिक यथार्थ, युद्ध का वर्णन, आर्थिक यथार्थ और राजनीतिक यथार्थ का विश्लेषण किये गये हैं ।

चतुर्थ अध्याय :- चयनित आत्मकथाओं में अन्य जीवन यथार्थ

प्रत्येक व्यक्ति के लिए समाज की यथार्थता अलग-अलग होती हैं । क्षेत्रीय भिन्नताएँ, विभिन्न धर्म, भाषाएँ, रीति-रिवाज़, लिंग आदि कुछ ऐसे कारक हैं जो हर व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करते हैं । इस अध्याय में बाल जीवन यथार्थ, प्रवासी जीवन यथार्थ, प्रवास के मुख्य कारण, प्रवासी आत्मकथा साहित्य की विशेषताएँ, 'आरोह-अवरोह' आत्मकथा में प्रवासी जीवन

यथार्थ , दलित जीवन यथार्थ, दलित का अर्थ और परिभाषा, 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में दलित जीवन यथार्थ, थर्डजेंडर जीवन यथार्थ, थर्डजेंडर का अर्थ और परिभाषा, थर्डजेंडर आत्मकथा और 'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन' में थर्डजेंडर जीवन यथार्थ का विवरण किये गये हैं ।

पंचम अध्याय :- चयनित आत्मकथाओं की भाषिक संरचना

भाषा मानव प्रयास के सभी क्षेत्रों में संचार का केंद्र हैं - चाहे वह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक हो। सभी भाषाओं में अनंत वाक्य होते हैं । भाषा शब्दों के समुच्चय से कहीं अधिक है क्योंकि वाक्य बनाने के लिए शब्दों को निश्चित तरीके से व्यवस्थित किया जाना चाहिए। इस अध्याय में आत्मकथाओं के शीर्षकों की सार्थकता, आक्रोश और महत्वाकांक्षा की भाषा, मिथकीय, बिंबात्मक एवं प्रतीकात्मक प्रयोग, आत्मकथाओं की शैली, आत्मकथाओं की भाषा, अलंकारिकता, सूक्तियाँ, लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे, शब्द - देशज, विदेशी, तत्सम और तत्भव के विवरण दिये हैं ।

उपसंहार

हिंदी साहित्य में आत्मकथा विधा सर्वोत्तम स्थान रखती है । आत्मकथा के माध्यम से ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त होती है । आत्मकथात्मक रचनाएँ प्राचीन काल से लेकर समकालीन काल तक मौजूद हैं, परन्तु आत्मकथात्मक साहित्य को आधुनिक काल में एक नई दिशा एवं स्थान मिली। आत्मकथा एक व्यक्ति का इतिहास है, जो उस व्यक्ति के वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन का चित्र प्रस्तुत करता है । व्यक्ति का विकास हमेशा जीवन की परिस्थितियों पर निर्भर रहता है और आत्मकथा का विषय वस्तु समकालीन जीवन की विभिन्न परिस्थितियों से भी संबंधित होती है । पुरुषों द्वारा लिखी गई आत्मकथाएँ पारिवारिक एवं सामाजिक परिवेश को प्रतिबिंबित करती हैं। पुरुषों ने भी महिलाओं पर ध्यान केंद्रित किया है और उनकी पीड़ा को उजागर किया है। लेकिन महिलाओं की आत्मकथाओं में यही परिवेश अधिक सूक्ष्म रूप में चित्रित हुआ है। स्त्री की कहानी को पुरुष के नज़रिए से देखा जाता था, लेकिन यहाँ स्त्री के गहन विचारों और व्यक्तिगत अनुभवों को आत्मकथा में प्रस्तुत किया गया है और जीवन की वास्तविकता को आत्मकथा की सच्चाई में बदल दिया गया है ।

संक्षिप्त रूप में ऐसे बता सकते हैं-

- ये आत्मकथाएँ हिन्दी आत्मकथा साहित्य के विकास के लिए विशेष योगदान रखते है । अन्तर्जगत की प्रेरणा से लेखिकाएँ आत्मकथा लिखने की निर्णय ली है ।
- एक ही व्यक्ति की जीवन घटनाओं से अनेक व्यक्तियों के जीवनी आत्मकथा में सम्मिलित हैं ।
- चयनित आत्मकथाओं के शीर्षक जैसे 'जो कहा नहीं गया', 'हादसे', 'अन्या से अनन्या', 'पिंजरे की मैना', 'शिंकजे का दर्द', 'आरोह-अवरोह', 'आपहुदरी' और 'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन' प्रतीकात्मक प्रयोग हैं ।
- स्वातंत्र्योत्तर भारत में, पारिवारिक यथार्थ में संयुक्त परिवार का विघटन हुआ और अणु परिवार प्रणाली प्रचलित हो गई। इस प्रणाली के माध्यम से महिलाओं को परिवार में अधिक

स्वतंत्रता मिलने लगी और इससे धीरे-धीरे महिलाओं की सामाजिक स्थिति भी परिलक्षित होने लगी।

- ❖ समकालीन आत्मकथा साहित्य में लेखिकाएँ अपनी परिस्थितियों में तृप्त नहीं हे जाने के कारण आक्रोश प्रकट करते हैं । लेखिकाएँ द्वारा सभी समस्याओं का विश्लेषण करते हुए एक नई जागरूकता का प्रस्तावना दिया है ।
- ❖ आर्थिक रूप में आत्मनिर्भर होकर सामाजिक बंधनों से मुक्ति होना चाहती है।
- ❖ सामन्ती परिवार, आर्यसमाज, दलित, थर्डजेंडर, प्रवासी लोगों के विचारों के प्रति लेखिकाओं ने निष्पक्ष रूप में प्रस्तुत की हैं ।
- ❖ सुशीला टाकभौरे, कुसुम अंसल, चन्द्रकिरण सौनरेक्सा जैसे लेखिकाओं को साहित्यिक क्षेत्र में कई कठिनाइयों को सामना करना पड़ा। इनके अनुभवों से स्पष्ट होता है कि साहित्य के क्षेत्र में भी पुरुष प्रधान और जाति संबंधित झुकाव विद्यमान है ।
- ❖ शोषित-पीड़ित औरतों की आत्म-कहानी होने के साथ-साथ यह सशक्त, ज़िद्दी, स्वाभिमानी महिलाओं की सफल कहानी भी है । इन लेखिकाओं के जीवन में पिता की भूमिका अहम होती है । पिता अपनी बेटियों से प्यार करते थे और उनका सम्मान करते थे। यह प्रसंग इस बात की ओर संकेत करता है कि महिलाएँ स्वयं अन्य महिलाओं की विरोधी बन रही थीं। माताएँ अपनी बेटियों को पुरानी परंपराओं और रीति-रिवाज़ों का पालन करने की हिदायत देती थी क्योंकि वे बचपन से ही उनका पालन करती आ रही हैं, और जिन कठिनाइयों का उन्होंने सामना किया है, उन्हें उनकी बेटियों को भी स्वार्थी रूप से अनुभव कराने की कोशिश की। परस्पर विरोधी अनुभवों के इस चित्रण को लेखिका के परिवार की महिला सदस्यों द्वारा उजागर किया है ।
- ❖ सामंती परिवारों में महिलाएँ अपने पति के अन्य महिलाओं के साथ संबंध को स्वीकार करने के लिए तैयार थीं। लेकिन किसी महिला का अपने पति के बिना किसी दूसरे पुरुष से बात करना भी अपराध माना जाता था। पति का संदेहास्पद स्वभाव, मायके की अजीब स्थिति, पुत्र को जन्म देने का दबाव, पति के साथ प्रेमपूर्वक रहने की चाहत, सब कुछ सचित्र बनाया है ।
- ❖ ये महिला लेखिकाएँ जीवन में असफल होने के लिए तैयार नहीं थी। वे सभी अपने सपनों को हासिल करने में सक्षम थे। आजकल युवाओं में आत्महत्या के खबर आम हो गए हैं । उनको मानसिक तनाव को सहन करने की क्षमता कम होते है । इसलिए ये आत्मकथाएँ नई पीढ़ी को जीवन की सभी समस्याओं से उभरने में मदद करेंगी, क्योंकि इन सभी लेखिकाओं कई कड़वे अनुभवों का सामना करके बहादुरी से सफलताओं को प्राप्त की हैं । वे मानसिक शोषण को नियंत्रित करने में सफल हुए।
- ❖ इन लेखिकाएँ शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डाला हैं । स्वतंत्र गगन में उड़ने की क्षमता इन स्त्रियों ने शिक्षा के ज़रिए प्राप्त की हैं ।
- ❖ दलित आत्मकथा, समाज में जाति व्यवस्था के उभरते आख्यान और दलित पहचान पर बदलते दृष्टिकोण को उजागर किया है । प्रमुख ध्यान उन आख्यानों की ओर जा रहा है, जो

मानवीय भावनाओं की समानता स्थापित करते हैं । दलित आत्मकथा अब अपनी ऐतिहासिक पीड़ा के बारे में चुप नहीं है, बल्कि पराधीनता से मुक्त होकर अपने इतिहास का वर्णन और व्याख्या करने में सक्रिय रूप से लगी हुई है । दलित आत्मकथा का उद्देश्य दलितों को पीड़ा से परे समृद्धि की ओर बढ़ने के लिए सशक्त बनाना, स्वीकार्यता को बढ़ावा देना और भेदभाव के कारणों को चुनौती देने की शक्ति प्रदान करना है ।

- बेटा-बेटी के बीच भेदभाव सामन्ती परिवार में बहुत हुए थे। लेकिन दलित परिवार में बेटा-बेटी भेदभाव कम हुआ था। समाज के हाशिये पर रहने वालों को सबके अधिकारों के प्रति आवाज़ उठाने की क्षमता थे। सुशीला टाकभौरे की माँ अपनी बच्चों के शिक्षा के लिए लड़ाई करने की क्षमता दिखाया और गरीबी के समय में भी बच्चों के भविष्य के प्रति जागरूक थी।
- दलित स्त्रियाँ शिक्षा के महत्व को समझकर प्रगतिवादी सोच का परिपालन करने की राह पर थे।
- सामंती परिवारों में महिलाओं ने खुद पर होने वाले शोषण को भावी पीढ़ियों तक पहूँचाने की कोशिश की। 'स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है', इस कहावत को सत्य साबित करते हूए सामंती परिवारों में कुछ ऐसी स्त्रियाँ होती थी जिसने अपने ख़ुद पर हूई शोषण अगली पीढ़ी की बालिकाओं के साथ भी वह होने दिए। इसके खिलाफ न वे तब कुछ बोल पाएँ और न अब अपने अंश का समर्थन किया। सामंती परिवार के इन स्त्रियों की यह स्वार्थता एवं कायरता दलित परिवारों के स्त्रियों में नहीं थे। उनमें यह प्रकृति हमें दिखायी देते हैं, दलित परिवार की महिलाओं ने शोषण से बचने और अपने बच्चों को अच्छी सुविधाएँ प्रदान करने के प्रयास किए हैं ।
- बाल विवाह का यथार्थ चित्रण भी प्रस्तुत किये हैं । बाल विवाह और भारत विभाजन के समय के घटनाओं के कारण कम उम्र में विधवा हो गई लड़कियों की स्थिति प्रस्तुत की गई है ।
- अपने अस्तित्व की पहचान के लिए संघर्षरत थर्डजेंजरों के लिए 'पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन' प्रेरणादायक है । यह थर्ड जेंडर महिला होने के अनुभवों को आधार बनाकर पर्याप्त संवेदनशीलता से लिखी गयी आत्मकथा है । यह आत्मकथा समाज में थर्डजेंडर के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल देती है । यह सुझाव देता है कि सामाजिक पूर्वाग्रहों को खत्म करने के लिए सार्थक प्रयास किए जाने चाहिए, जिसकी शुरुआत परिवारों में स्वीकार्यता से की जाए। लेखिका का तर्क है कि यदि परिवार पारंपरिक लिंग मानदंडों के अनुरूप नहीं होने वाले व्यक्तियों को स्वीकार करते हैं और उनका समर्थन करते हैं तो थर्ड जेंडर के खिलाफ सामाजिक पूर्वाग्रह को कम किया जा सकता है । यह आत्मकथा हिजड़ा लोगों के लिए संवैधानिक अधिकारों के महत्व को रेखांकित करता है, जिसमें कहा गया है कि ऐसे अधिकार न केवल एक राजनीतिक उपकरण हैं, बल्कि पारंपरिक लिंग प्रणाली के बाहर व्यक्तियों के लिए सम्मानजनक और सामान्य जीवन में भी योगदान करते हैं ।
- हिजड़ा समुदायों के बीच सामाजिक पदानुक्रम और सामुदायिक मानदंड उनके व्यवहार और निर्णय लेने की क्षमताओं को प्रभावित करते हैं । स्कूल और कॉलेज प्रशासन के साथ-साथ

शिक्षा प्रणाली को ट्रांसजेंडर विचार-विषय पर संवेदनशील बनाकर मजबूत करने की आवश्यकता है ।

- ❖ ट्रांसजेंडर समुदाय की ज़्यादातर व्यापक अवधारणा के लिए ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के व्यक्तिगत चरित्र विशेषण, इतिहास और उभरते सामाजिक-राजनीतिक आंदोलनों की जाँच की ज़रूरत है।
- ❖ लैंगिक अस्मिता, अस्तित्व और समानता के लिए जो भी संघर्ष हूए हैं, वह सब रेखांकित की गई है । थर्डजेंडर व्यक्ति को अपनी लैंगिक पहचान को समाज में स्वीकार्यता दिलाने के लिए भगीरथ प्रयत्न करना पड़ता है । लिंग पुनर्निर्धारण सर्जरी और अन्य कठिनाइयों को सहन करने की मानसिक क्षमता रखना कठिन है ।
- ❖ समाज के सकारात्मक दृष्टिकोण और थर्डजेंडर व्यक्तियों के आत्मविश्वास से उनके जीवन की कठिनाइयों को कम कर सकते हैं ।
- ❖ सुषम बेदी, प्रवासी होने के कारण अन्य देश में जाकर भाषाई कठिनाइयों को सामना करना पड़ा है । इसके अलावा दूसरी संस्कृति को अपनाकर अपनी संस्कृति के यादों में जीने की घटनाओं पर भी प्रकाश डाला है ।
- ❖ रमणिका गुप्ता, राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं के प्रति होने वाले पूर्वग्रह के बारे में भी जगमगा दिया है । हमारे भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के समय कई महिलाएँ आंदोलनों में शामिल होकर संघर्षों में भाग लिया, लेकिन 76 वर्ष के बाद भी राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की संभावनाओं के प्रति लोग अज्ञान हैं ।
- ❖ भाषा एक सामाजिक वस्तु होने के कारण मानव सामाजिक संपर्कों से भाषा सीखते है । पहले परिवारवालों की सहायता से भाषा सीखना शुरू होता है, लेकिन बाद में वह एक व्यक्ति की आवश्यकता बन जाती है । एक व्यक्ति स्वयं समाज से भाषा सीखना शुरू करते है । दूसरों से अपने विचारों को प्रकट करने के लिए भाषा का प्रयोग करना चाहिए। अधिकांश लोग अपने आप बातचीत करते वक्त मातृभाषा का प्रयोग करते है । आत्मकथात्मक रचनाओं की भाषाशैली कलात्मक और परिनिष्ठित होती है ।
- ❖ भाषिक संरचना को आत्मकथा में विशेष स्थान रखा है । स्थानीय भाषा, महिलाओं के महत्वाकांक्षा, अपने अधिकारों के प्रति आक्रोश, काव्यात्मक भाषा, भाषा के कलात्मक रूप जैसे - मिथक, बिंब, अलंकार और प्रतीक, लोकोक्ति और मुहावरे के प्रयोग से भाषिक सौंदर्य की नई अनुभूती दी गई हैं।

इन आत्मकथाओं में स्त्री के विभिन्न अनुभवों के माध्यम से स्त्री जीवन की विभिन्न समस्याओं को सामने लाने का प्रयास किया गया है, वह आज के युग के लिए प्रासंगिक है । वर्तमान समाज की सभी संगतियों एवं विसंगतियों का यथार्थ चित्र उभरने में अन्य साहित्यिक विधाओं की उपेक्षा आत्मकथा साहित्य बहूत सक्षम है । आत्मकथा साहित्य समकालीन युग की सबसे सशक्त साहित्यिक विधा बन गयी। सामाजिक यथार्थ के निकट होने के कारण आत्मकथा में सामाजिक चेतना अधिक प्रतिबिंबित होती है। हमारे देश की प्रगति एक सतत, दीर्घकालिक प्रक्रिया है । पिछले कुछ वर्षों से, महिलाओं ने वर्षों की कड़ी मेहनत और आत्म-सम्मान की यात्रा

के कारण अपनी स्थिति में सकारात्मक बदलाव देखे हैं। आज महिलाएँ अपने अधिकारों के लिए सक्रिय रूप से लड़ रही हैं, जिससे उनके जीवन की परिभाषा बदल रही है ।

प्रगतिशील महिला लेखिकाओं ने लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण में योगदान दिया है । चयनित आत्मकथाएँ विषय वैविध्य के कारण साहित्य जगत में अनोखा स्थान रखती है । उनके निर्भीक और आत्मप्रदर्शन अतुलनीय है, इसलिए यह भारतीय महिलाओं के लिए अपनी सशक्तिकरण, आत्म-पहचान और आत्म-गरिमा के लिए प्रेरणादायक एवं प्रासंगिक भी हैं। प्रस्तुत आत्मकथाओं के द्वारा महिलाओं के विभिन्न पहलुओं के विश्लेषण करने का प्रयास किये हैं । ये आत्मकथाएँ सामाजिक सुधार के एक उपकरण के रूप में समाज में प्रकाश डालेगा। जैसे -

- इक्कीसवीं सदी की आत्मकथाओं में पुरुष विमर्श
- राजनीतिक नेताओं की आत्मकथाओं का विश्लेषणात्मक अद्ययन
- हिन्दी प्रवासी लेखकों की आत्मकथा का विश्लेषण
- भारतीय भाषाओं का आत्मकथाओं की तुलना
- अंग्रेज़ी के थर्डजेंडर आत्मकथाओं का अनुवाद

संदर्भ ग्रन्थ

आधार ग्रन्थ

क्र.सं.	लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
1	कुसुम अंसल	जो कहा नहीं गया (1996)	राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली - 110006, 2019
2	रमणिका गुप्ता	हादसे (2005)	राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली -110 051, 2019
3	प्रभा खेतान	अन्या से अनन्या (2007)	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली - 110 002, 2021
4	चन्द्रकिरण सौनरेक्सा	पिंजरे की मैना (2008)	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली - 110 002, 2022
5	सुशीला टाकभौरे	शिंकजे का दर्द (2011)	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली - 110 002, 2020
6	सुषम बेदी	आरोह अवरोह (2014-2015)	सामयिक बुक्स, नई दिल्ली - 110 002, 2017
7	रमणिका गुप्ता	आपहुदरी (2014-2015)	सामयिक बुक्स, नई दिल्ली - 110 002, 2021
8	मानोबी बंद्योपाध्याय	पुरुष तन में फँसा मेरा नारी मन (2018)	राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली - 110006, 2018

सहायक ग्रन्थ

क्र.सं.	संपादक / लेखक	पुस्तक का नाम	प्रकाशक
1.	शिवानी गुप्ता	मैं हिजड़ा...मैं लक्ष्मी! आत्मकथा में चित्रित किन्नर समस्याएँ	विकास प्रकाशन, कानपुर - 208027 2022
2.	डॉ.कपिलदेव द्विवेदी	भाषा-विज्ञान एवं भाषा शास्त्र	विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणासी, 2019
3.	डॉ. शगुप्ता नियाज़	थर्डजेंडर के संघर्ष का यथार्थ (साठोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में)	विकास प्रकाशन, कानपुर, 2018
4.	डॉ. षीबा एम.आर	चित्रा मुदगल के कथा साहित्य में प्रतिरोधी स्वर	गोविन्द पचौरी, जवहर पुस्तकालय, हिन्दी पुस्तक प्रकाशक एवं वितरक, सदर बाज़ार , मथुरा - 281001(उ.प्र.), 2018
5.	डॉ. दिलीप मेहरा डॉ. हसमुख परमार	इक्कीसवीं सदी का गद्य साहित्य	माया प्रकाशन 6A/540 , आवास विकास हंसपुर, कानपुर - 208 021, 2017
6.	महेन्द्र नाथ दुबे, कु.डॉ. मीनाक्षी दुबे	भाषा, भाषा-विज्ञान और राजभाषा हिन्दी	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली -110002, 2017
7.	डॉ. शशिकांत सोनवणे 'सावन'	भारतीय स्त्री साहित्य- Indian Women Literature (दलित आदिवासी एवं निम्न वर्गीय आत्मकथनों के परिप्रेक्ष्य में)	माया प्रकाशन 6A/540, आवास विकास, हंस पुरम, कानपुर - 208 021, 2017
8.	डॉ. के.एम. मालती	स्त्री विमर्श : भारतीय परिप्रेक्ष्य (हिन्दी और मलयालम महिला कथा लेखन के विशेष संदर्भ में)	वाणी प्रकाशन 4695, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002 2014
9.	डॉ. आनंद सिन्दल	आत्मकथा : साहित्य, सिद्धांत और समीक्षा	अमन प्रकाशन 104 A/ 80C रामबाग, कानपुर- 208 012, 2014
10.	डॉ.संगीता के.	नारी चेतना के सार्थक तलाश	जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी प्रकाशक एवं वितरक मथुरा(उ.प्र)281 001 2013
11.	रोशी शर्मा	हमारे सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय प्रतीक	रोशी शर्मा, दिल्ली - 110032 2013
12.	डॉ. यश्वंतकर संतोषकुमार लक्ष्मण, डॉ. शेख मुखल्यार	स्त्री विमर्श के विविध आयाम	2013
13.	डॉ.सुधा बालकृष्णन	नारी : अस्तित्व की पहचान (साठोत्तरी लेखिकाओं की कहानियों में)	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली -110002 2013

14.	राजेन्द्र यादव अर्चना वर्मा	औरत: उत्तरकथा	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1- बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली - 110002, 2013
15.	नन्दकिशोर आचार्य	परम्परा और परिवर्तन	कविता प्रकाशन, बीकानेर - 334 005 2012
16.	सुदर्शन पासवान	दलित साहित्य और संघर्ष	राधा पुस्तक केन्द्र, द्वितीय तल, 94 मानक विहार, दिल्ली - 110092 2012
17.	राजीव कर्दम	दलितों का मसीहा - डॉ. भीमराव अम्बेडकर	सान्या कम्यूनिकेशन्स, शाहदरा, दिल्ली - 110032, 2012
18.	डॉ. संजय गर्ग उप संपादक - सुशील कुमार	स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास	सामयिक प्रकाशन 3320-21, जटवाडा, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज,नई दिल्ली - 110002, 2012
19.	डॉ.नरेश कुमार	भाषा और लिपि	गरिमा बुक्स, 6/40,मोहल्ला महाराम, गली आर्य समाज, शाहदरा, दिल्ली - 110032, 2011
20.	डॉ.नीलिमा शाह	दलित विमर्श और विवेकी राय की कहानियाँ	एकता प्रकाशन 1895/5, इलाहाबाद 2011
21.	पूजा शर्मा	भारत में सामाजिक समस्याएँ	शिव बुक हाउस, जयपुर, 2011
22.	डॉ.रमा नवले	भाषा और साहित्य के विभिन्न आयाम	विकास प्रकाशन, कानपुर - 208 027 2011
23.	डॉ. लक्ष्मी मल्ल सिंघवी	भारत आज़ादी और संस्कृति	सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन - नई दिल्ली - 110001, 2011
24.	आचार्य प्र.के. अत्रे	दलितों के बाबा	समता प्रकाशन, विश्वास नगर, शाहदरा, दिल्ली - 110032, 2010
25.	रमणिका गुप्ता	स्त्री विमर्श कलम और कुदाल के बहाने	शिल्पायन 10295, लेन नं.1, नैस्ट गौरखपार्क, शाहदरा, दिल्ली , 2010
26.	डॉ.भोलानाथ तिवारी	हिन्दी भाषा का इतिहास	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली -110002 2010
27.	डॉ.मनोज कुमार सिंह	भारतीय महिलाएँ - अधिकार एवं चुनौतियाँ	अंकित पब्लिकेशन्स R-69 माडल टाउन, तीसरा तल, दिल्ली - 110009 2010
28.	डॉ.संजय नवले डॉ. गिरिश काशिद	दलित साहित्यःप्रकृति और संदर्भ	अमन प्रकाशन 104A/118 रामबाग, कानपुर-208012 2010
29.	वीरेन्द्र सिंह बघेल	अंग्रेज़ी - हिन्दी मुहावरा एवं कहावत कोश	आकाशदीप पब्लिकेशन्स, महरौली, नई दिल्ली - 110030, 2010
30.	ब्रजकिशोर शर्मा	मानव अधिकार अंतरराष्ट्रीय प्रसंविदाएं और भारत की विधि	PHI Learning Private Limited, नई दिल्ली 110001, 2010
31.	ड़ॉ.अरसु	भारतीय साहित्य ऊर्जा और उन्मेष	जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी प्रकाशक एवं वितरक मथुरा(उ.प्र)281 001

			2009
32.	डॉ.प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	संस्कृति भाषा और साहित्य	जवाहर पुस्तकालय, हिन्दी प्रकाशक एवं वितरक मथुरा(उ.प्र)281 001 2009
33.	डॉ.नगेन्द्र	भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास	हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय 2009
34.	डॉ.भारती शोळके	महिला रचनाकारों की कहानियों में जीवन मूल्य	विद्या प्रकाशनन, सी 449, गुजैनी, कानपुर - 22, 2008
35.	गिरीश मिश्र	साहित्य में समाज	अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर- 842002 2008
36.	बृंदा करात अनुवादक - उषा चौहान	भारतीय नारी - संघर्ष और मुक्ति (भारतीय महिला आंदोलनों के कुछ विवरण)	ग्रन्थ शिल्पी, प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली - 110092, 2008
37.	डॉ. एम. षणमुखन	नारी अस्मिता के विविध आयाम	हिंदी विभाग, कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय , कोच्चि-682022 (केरल), 2008
38.	डॉ. प्रीतिप्रभा गोयल	भारतीय संस्कृति	राजस्थानी ग्रन्थगार, जोधपुर, 2008
39.	डॉ. सन्त शरण शर्मा	मानक - व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण तथा भाषा-बोध	अमर प्रकाशन, मथुरा - 281001 (उ.प्र), 2007
40.	रामचन्द्र सरोज	हिन्दू वर्ण-व्यवस्था पुनर्विचार और विश्लेषण	राका प्रकाशन, इलाहाबाद -2, 2007
41.	दामोदर धर्मानंद कोसंबी (अनुवादक : गुणाकर मुले)	प्राचीन भारत की संस्कृति और सभ्यता	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1- बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली - 110002, 2007
42.	प्रभाकर क्षत्रिय	सौंदर्य का तात्पर्य	गंगा डिस्ट्रीब्यूटर्स - 21 - ए दरियागंज, नई दिल्ली - 02 2007
43.	डॉ. पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु'	शैली और शैली विश्लेषण	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली -110002 2007
44.	डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी	भाषा विज्ञान एवं हिन्दी भाषा	आशीष प्रकाशन, कानपुर द्वितीय (संशोधित एवं परिवर्धित), 2006
45.	ड़ॉ.देवेन्द्र प्रसाद सिंह	भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा का स्वरूप-विकास	जयभारती प्रकाशन 267-बी, मुट्ठीगंज, मायाप्रेस रोड, इलाहाबाद- 211 003, प्र. सं 2006
46.	राजेन्द्र यादव	देहरी भई विदेस (लेखिकाओं के आत्मकथांश)	किताबघर प्रकाशन 4855-56/24, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - 11002, 2006
47.	रामअवतार यादव	दलित आत्मकथा दलित महाकाव्य	अमन प्रकाशन 104 A/80C रामबाग, कानपुर- 208 012, 2006

48.	डॉ.कालीचरण 'स्नेही'	हिन्दी साहित्य में दलित अस्मिता	आराधना ब्रदर्स 124/152 सी-गोविन्द नगर, कानपुर-208006, 2006
49.	आशारानी व्होरा	औरत कल, आज और कल	कल्याणी शिक्षा परिषद, 3320-21 जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 (भारत), 2005
50.	ब्रज भूषण राजवंशी वेद प्रकाश सोनी	मुख्य धर्मों का आदि स्रोत	चेतन साहित्य मंदिर, लजपत नगर, नई दिल्ली - 110024, 2004
51.	लीला दुबे	लिंगभाव का मनोवैज्ञानिक अन्वेषण : प्रतिच्छेदी क्षेत्र	वाणी प्रकाशन 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002, 2004
52.	डॉ.जे. बी. सिन्हा	बाबा साहब अम्बेडकर - सामाजिक न्याय एवं दलितोत्थान की योजनाएँ	शांति प्रकाशन, इलाहाबाद -211003, 2004
53.	जयश्री गोस्वामी महंत अनुवाद- दिनकर कुमार	नारी तुम अनन्या हो	कल्याणी शिक्षा परिषद्, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002, 2003
54.	प्रभा खेतान	उपनिवेश में स्त्री मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1- बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली - 110002, 2003
55.	डॉ. राजकुमार	नारी - शोषण समस्याएँ एवं समाधान	अर्जुन पब्लिशिंग हाउस 4831य24, प्रहलाद स्ट्रीट, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली -110002, 2003
56.	तेजपाल चौधरी	भाषा और भषा विज्ञान	विकास प्रकाशन, कानपुर - 27, 2002
57.	अरविन्द जैन	महिला लेखन का समाजशास्त्रीय अध्ययन	राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1- बी, नेताजी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली - 110002, 2001
58.	राजकिशोर	आज के प्रश्न स्त्री के लिए जगह	वाणी प्रकाशन, 21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली - 110002, 2000
59.	डॉ.लक्ष्मीकान्त पाण्डेय	हिन्दी भाषा संरचना एवं प्रयोग	साहित्य रत्नालय 37/50, कानपुर, 2000
60.	डॉ.शिववंश पाण्डेय	हिन्दी साहित्य विविध आयाम	अविराम प्रकाशन, दिल्ली - 110032, 1999
61.	प्रो. आर.बी. वार्ष्णेय	हिन्दी व्याकरण	पचौरी प्रेस, मथुरा - 281 001, 1999
62.	डॉ. विष्णु पंकज	जनसंचार की विधा साक्षात्कार	माया प्रकाशन मंदिर, त्रिपोलिया बाज़ार, जयपुर, 1998
63.	डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया और रचना भाटिया	साहित्य में गद्य की नई विविध विधाएँ	तक्षशिला प्रकाशन अन्सारी रोड, नई दिल्ली 110002, 1996

64.	डॉ.डी.डी. शर्मा	भाषा-विज्ञान (सिद्धान्त)	अशोक प्रकाशन, दिल्ली, 1996
65.	डॉ. भोलानाथ तिवारी	हिन्दी भाषा	किताब महल, इलाहाबाद, 1992
66.	एस.एम चाँद	भारतीय संस्कृति का विकास(Evolution of Indian Culture)	प्रिन्टवेल, जयपुर - 302004, 1992
67.	डॉ. शीला रजवार	स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में नारी के बदलते सन्दर्भ	ईस्टर्न बुक लिंकर्स, 5825 जवाहर नगर, दिल्ली - 110007, 1989
68.	डॉ. विश्व बन्धु शास्त्री, विद्यालंकार	हिन्दी का आत्मकथा साहित्य (स्वरूप-विवेचन और विकास-क्रम)	राधा प्रकाशन, सीताराम बाजार, दिल्ली-6, 1989

पत्र - पत्रिकाएँ

क्र.सं.	लेखक	लेख का शीर्षक	पत्रिका	ISSN	अंक	वर्ष
1	बन्ना राम मीना	प्रवासी हिंदी साहित्य में अभिव्यक्त भारतीय संस्कृति	प्रवासी जगत	2581-6985	2	जनवरी-मार्च 2023
2	संतोष कांबले, पूनम शर्मा	सुषम बेदी के कथा-साहित्य में अभिव्यक्त प्रवासी नारी व्यथा	प्रवासी जगत	2581-6985	2	जनवरी-मार्च 2023
3	प्रीति दुबे	इक्कीसवीं सदी के स्त्री हिन्दी आत्मकथा-साहित्य में राजनीतिक चेतना का आयाम	चिन्तन	2229-7227	33	जनवरी-मार्च, 2019
4	रमेश मनोहर लमाणी	आधुनिक हिन्दी आत्मकथाओं में दलित संवेदना	अनुसंधान	0975-850X	4	अप्रैल-जून 2013

Sl.No.	Websites
1)	https://www.britannica.com/topic/feminism
2)	https://study.com/learn/lesson/feminism-types-features-liberal-cultural.html
3)	https://www.drishtiias.com/hindi/blog/women-empowerment-in-india
4)	https://www.successcds.net/hindi/essays/essay-on-women-empowerment-in-hindi.html
5)	https://leverageedu.com/blog/hi/women-empowerment-speech-in-hindi/
6)	http://cmcldp.org/userfiles/Women%20Empowerment.pdf
7)	https://testbook.com/articles-in-hindi/women-empowerment-speech-in-hindi
8)	https://open.lib.umn.edu/hindiurdu/chapter/8-2-women-empowerment/
9)	https://en.wikipedia.org/wiki/List_of_Indian_women_writers
10)	https://mycoaching.in/hindi-sahitya

11)	https://www.drishtiias.com/optional-subject/hindi-literature
12)	https://manuu.edu.in/dde/sites/default/files/DDE/DDE-SelfLearnmaterial/ba-4th-sem/28-Jul-2023/Hindi__28_jul_2023.pdf
13)	http://www.abhivyakti-hindi.org/1purane_ank/2000/08_2000/ahski.htm
14)	https://www.uou.ac.in/sites/default/files/slm/BAHL-101.pdf
15)	https://www.wef.org.in/dr-kusum-ansal/
16)	https://www.bhartiyasahityas.com/authors/kusum-ansal/
17)	https://www.aajtak.in/literature/story/ramnika-gupta-activist-author-politician-dies-in-new-delhi-648242-2019-03-26
18)	https://en.wikipedia.org/wiki/Chandrakiran_Sonrexa
19)	https://pustak.org/index.php/books/authorbooks/Chandrakiran%20Saunrexa
20)	https://hinditechacademy.com/difference-between-autobiography-and-biography-in-hindi/
21)	https://listrovert.com/best-autobiography-books-in-hindi/
22)	https://brainly.in/question/1206811
23)	https://guides.library.illinois.edu/c.php?g=532151&p=3641370
24)	https://www.forwardpress.in/2022/10/dalit-autobiographies-are-like-rock-inscriptions-bearing-dalit-history/